Goonjnayi@gmail.com

अक्टूबर अंक 2022

शोध साहित्य एवं संस्कृति की उत्कृष्ट मासिक पत्रिका

नई गूँज

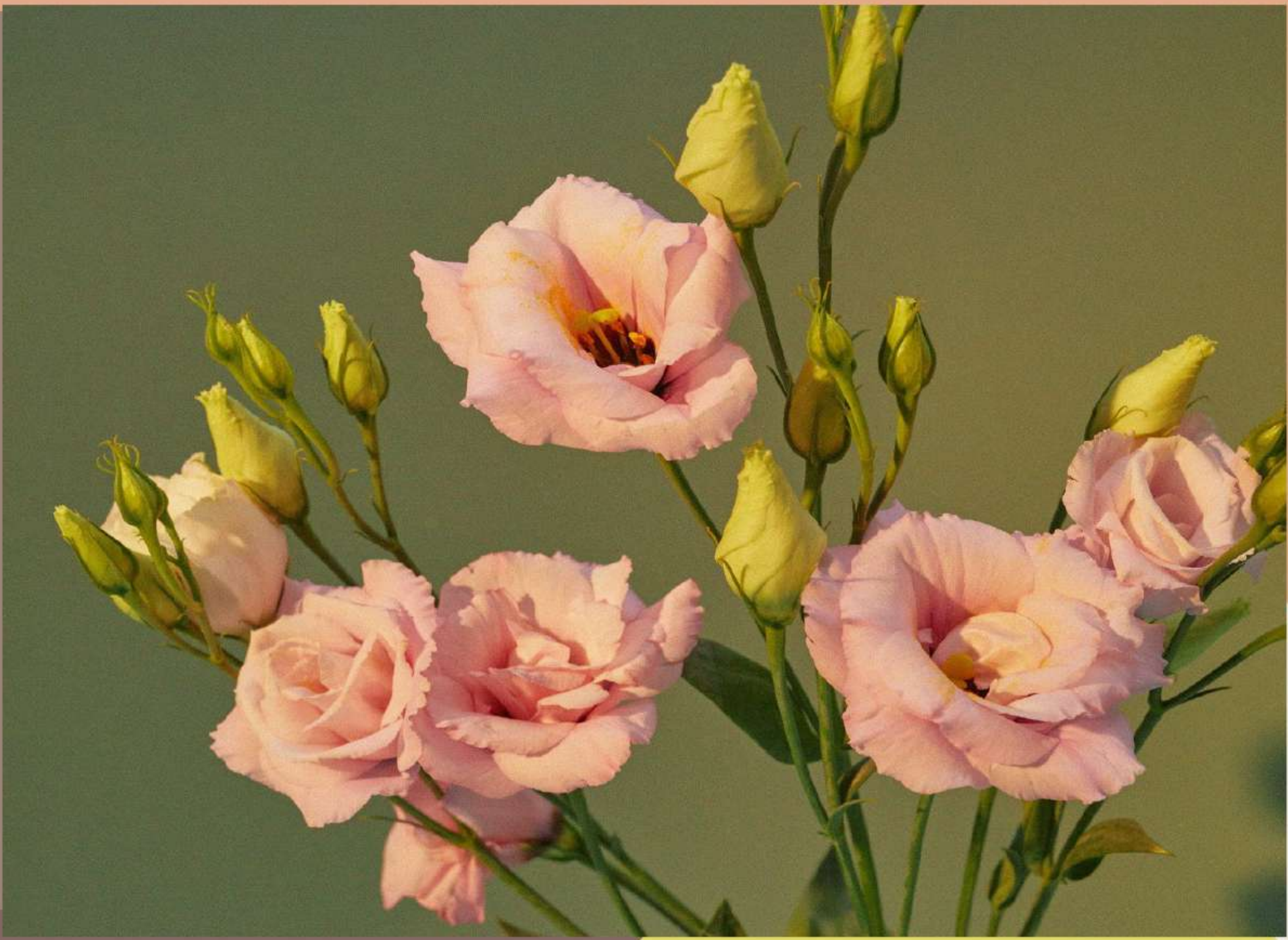

Www.nayigoonj.com

NAYI GOONJ – SHODH , SAHITYA EVAM SANSKRITI (MONTHLY) MAGAZINE

शोध , साहित्य और संस्कृति की मासिक वैब पत्रिका

नयी गूंज-------.

वर्ष 2022

अंक 10

WEBSITE- nayigoonj.com
Email address goonjnayi@gmail.com -
WHATSAPP NO. 91-9785837924

संपादक मंडल

प्रमुख संरक्षक

प्रो. देव माथुर

vishvavishvaaynamah.webs1008@gmail.com

मुख्य संपादक

रीमा माहेश्वरी

shuddhi108.webs@gmail.com

संपादक

शिवा 'स्वयं'

sarvavidhyamagazines@gmail.com

शाखा प्रमुख

ब्रजेश कुमार

aryabrijeshsahu24@gmail.com

परामर्शदाता

कमल जयंथ

jayanth1kamalnaath@gmail.com

सम्पादकीय

शिवा स्वयं

मिट्टी का बर्तन हो बर्तन में हो सोना

सोने के बर्तन में मिट्टी ऐसा नहीं होना

हम सब निरंतर खुद क़ो हर प्रकार से भरने का प्रयास करते रहते हैँ, जानकारियां हों या सुख समृद्धि! लेकिन ऊपरी रूप से सुन्दर होने से, जरूरी नहीं कि अंदर से भी हम अंदर से भी सुन्दर ही हो ! महत्व ये रखता है कि

सादा जीवन उच्च विचार

और बजाय इसके हम ऊपरी उच्च और भीतरी निम्न होते जा रहें हैँ मानो हमें बोध ही नहीं कि क्या करना है और क्या नहीं !”

सोचिये कि मेकअप वाला चेहरा कितने समय तक तक चमक सकता है वही अर्थ है सोने के बर्तन में मिट्टी हो जैसे ! चिरस्थाई वो है जो भीतर से गुणी है वही साधारण होते हुए भी असाधारण है !

वही बनना चाहिए, वही करना चाहिए ऐसा नहीं कि खुद से नजरें मिलाने में भी सोचना पड़े, पूछना पड़े खुद से कि जीवन में क्या सदुपयोग किया ? क्या कुछ ऐसा किया हम यह कह सकें कि जीवन सार्थक जीया !

बड़ा बनने के लिए जरूरी नहीं होता कि हम गाड़ी, मकान और दुकान, शोहरत, सोना, चांदी, हीरे, जवाहरात इनसे खुद को आंके! परखना है तो यह परखिए कि कितने दिलों पर आप राज कर सकते हैं ! कितने जीवनों को आप संवार सकते हैं ! किसी की भी चमक उसके कर्मों से प्रकाशित होती है इस बात से नहीं कि कितने चमकीले आभूषण उसने पहने हुए हैं! हमें चाहिए कि अपने कर्मों को ऐसा बनाएं कि वह हमें एक प्रकाश जैसी आभा भर सकें!!

मिट्टी का बर्तन हो, बर्तन में हो सोना........ यही कीमती है! ना कि ये कि ऊपर से हम चमक रहें हैं और अंदर से खोखले !

इंसान क़ो अपने आपको अंदर से सजाने संवारने की भी कोशिश करनी चाहिए, बल्कि हम यथा संभव कोशिश करते हैँ कि क्या क्या ऐसा करें कि हम सुन्दर दिखें ! इस सब में समय और पैसा सब लगाते हैँ खुशी से लेकिन इस बात पर

ध्यान नहीं देते क्या ऐसा करें कि हम किसी के चेहरे पर ख़ुशी लाने की कोशिश करें !

असली सुंदरता तो वो होगी कि किसी रोते हुए बच्चे क़ो हँसा कर देखिये ! तब उसे हँसते हुए देख कर अपने मन के सुकून क़ो टटोल कर देखिएगा ! शायद ही आप किसी बात से खुद क़ो इतना पूर्ण महसूस करेंगे !

कहते हैँ ना हर चमकने वाली चीज सोना नहीं होती ! इसी तरह ज़ब आप अपनी तुलना ऊपर से सोना दिखने वालों से मत कीजिये ! देखिए जरा गौर से जिन लोगों क़ो हम किताबों में पढ़ते हैँ वे सब अपने विचारों के बढ़े होने से, महान बन पाये ना की ऊपरी चमक क़ो या ऐश्वर्य क़ो बढ़ा कर !

बढ़ा वो है जो चिड़ियों की चहचाहट में संगीत महसूस करता हो, बढ़ा वो है जो देकर खुश होता हो !

बढ़ा वो है जो खुद दर्द लेकर, खुशियों क़ो बाँटने का हौसला रखता हो !

हमने देखा है अपने आस पास लोग तरह तरह के आडम्बरों क़ो अपने चेहरे पर ओढ़ कर, शान शौकत का दिखावा करके, यह आसानी से साबित कर लेते हैँ हम बढ़े हैँ !

दरअसल बढ़े और ऊँचे में बहुत अंतर होता है !

आप सबने सुना होगा

बढ़ा भया तो क्या भया,

जैसे पेड़ खजूर!

पंथी क़ो छाया नहीं,

फल लागे अति दूर!!

उस जीवन का क्या प्रयोज़न जो किसी के काम न आ सकें ! अपने लिए जीना भी क्या कोई जीना है ?

मनुष्य जीवन का अर्थ है कि बौद्धिक रूप से समृद्ध बने ! अपने विचारों क़ो उन्नत बनाएं वही आपका योगदान है समाज के लिए ! बुद्धि का भेद ही हमें पशुता से भिन्न कहलाता है ! इस बुद्धि का प्रयोग केवल भौतिकता क़ो अर्जित करने के लिए नहीं किया जाना चाहिए !

ईश्वर ने मनुष्य शरीर देकर हम पर कुछ दायित्व दिए हैँ, हमें ईश्वर के उस इशारे क़ो समझना है !' हमें समझना है कि क्या वो विशेष प्रयोज़न है जिसके लिए ये जन्म मिला है !'

औऱ अपनी क्षमताओं क़ो उसी दिशा में लगा देना है, जिसके लिए हम बने हैँ ताकि एक दिन हम ईश्वर के सम्मुख खड़े

होकर ये कह सकें कि हे प्रभु ! आपके दिए जीवन क़ो मैंने बेकार नहीं किया, इसके मोल क़ो समझकर, इसे सार्थक बना सकें !

शुभेच्छा

नयी गूंज------. परिवार

परामर्शदाता-

प्रश्न है कि संस्कृति क्या है। यूं संस्कृति शब्द सम्+कृति से बना है, जिसका अर्थ है अच्छी कृति। अर्थात् संस्कृति वस्तुतः राष्ट्रीय अस्मिता के परिचायक उदात्त तत्वों का नाम है।

भारतीय सन्दर्भ में संस्कृति व्यक्तिनिष्ठ न होकर समष्टिनिष्ठ होती है। संस्कृति की संरचना एक दिन में न होकर शताब्दियों की साधना का सुपरिणाम होता है। अतः संस्कृति सामासिक- सामाजिक निधि होती है। संस्कृति वैचारिक, मानसिक व भावनात्मक उपलब्धियों का समुच्चय होती है। इसमें धर्म, दर्शन, कला, संगीत आदि का समावेश होता है। इसी की अपरिहार्यता की ओर संकेत करते हुए भर्तृहरि ने लिखा है कि इसके बिना मनुष्य घास न खाने वाला पशु ही होता है-

"साहित्यसंगीतकला- विहीनः

साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः।।

मुख्य संपादक

उपनिषद् के शब्दों में कहें तो संस्कृति में जीवन के दो आयाम श्रेय व प्रेय का सामंजस्य होता है। इन्हीं आधार पर आध्यात्मिक, वैचारिक व मानसिक विकास होता है और इन्हीं के आधार पर जीवन-मूल्यों व संस्कारों का निर्धारण होता है और यही जीवन के समग्र उत्थान के सूचक होते हैं। शिक्षा-तंत्र में इन्हीं सांस्कृतिक मूल्यों का शिक्षण-प्रशिक्षण होता है। वर्तमान में शिक्षा-व्यवस्था संस्कृति की अपेक्षा सभ्यता-निष्ठ अधिक है। तात्पर्य है कि वर्तमान शिक्षा विचार- प्रधान, चिन्तन- प्रधान व मूल्यप्रधान की अपेक्षा ज्ञानार्जन- प्रधान है। वस्तुतः इसी का परिणाम है कि सम्प्रति शिक्षा के द्वारा बौद्धिक स्तर में तो अभिवृद्धि हुई है किन्तु संवेदनात्मक या भावनात्मक स्तर घटा है।

संपादक -

हमारी शिक्षा में सांस्कृतिक मूल्यों के स्थान पर पश्चिमी सभ्यता-मूलक तत्वों को उपादान के रूप में ग्रहण कर लिया गया है। तभी तो शिक्षा व समृद्धि के पाश्चात्य मानदण्डों को आधार मान लिया है जो संस्कृति-विरोधी हैं, जिनमें नैतिक व मानवीय मूल्यों का विशेष स्थान नहीं है। इसी का परिणाम है कि बुद्धिमान व गरीब नैतिक व्यक्ति सामाजिक दृष्टि से भी हांसिये पर ही रहता है और नैतिकता-विहीन, संवेदनहीन, भ्रष्टाचारी व अपराधी भी सम्पन्न, सभ्य, सम्मान्य व प्रतिष्ठित होता है। इसी संस्कृति-विहीन व्यवस्था के कारण शोषण-प्रधान पूंजीवादी व्यवस्था ही ग्राह्य हो गई है, जिसने रहन-सहन के स्तर को तो उठाया है, पर इस भोगवादी बाजारवादी व्यवस्था के कारण अर्थशास्त्र व तकनीकिविज्ञान के सामने नैतिकता व मानवीयता गौण हो गई है। जबकि राधाकृष्णन व कोठारी आयोग की मान्यता थी कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जो सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम बन सके। इस दृष्टि से भारतीय प्रकृति और संस्कृति के अनुरूप शिक्षा से ही मूल्यपरक उदात्त-गुणों का संप्रेषण और समग्र व्यक्तित्व का निर्माण सम्भव है। इसमें पुराने व नये का बिना विचार किये जो देश की अस्मिता व समाज के हितकर है, उसी को प्रमुखता देनी चाहिए।

शाखा प्रमुख की कलम से--

प्रिय पाठकों

संस्थान की पत्रिका नयी गूंज के पहले अंक का लोकार्पण एक आंतरिक सुख की अनुभूति करा रहा है।

मुझे प्रसन्नता है कि शाखा प्रमुख *के रूप में कार्यभार संभालने के बाद मुझे आप सभी से नयी गूंज के इस अंक के माध्यम से रूबरू होने का मौका मिल रहा है।*

हम कितना भी विकास कर लें किन्तु यदि समाज में संवेदना ही मर गई तो सब व्यर्थ है। इस संवेदनहीनता के चलते समाज में नकारात्मक ऊर्जा दिन प्रति-दिन बढ़ती जा रही है जो निन्दनीय भी है और विचारणीय भी। आवश्यकता है कि हम अविलम्ब इस दिशा में अपने प्रयास आरम्भ कर दें।

वस्तुतः अपने कर्मों से हम अपने भाग्य को बनाते और बिगाड़ते हैं। यदि गंभीरता से चिंतन-मनन किया जाय तो हमारा कार्य-व्यापार हमारे व्यक्तित्व के अनुसार ही आकार ग्रहण करता है और हमें अपने कर्म के आधार पर ही उसका फल प्राप्त होता है। कर्म सिर्फ शरीर की क्रियाओं से ही संपन्न नहीं होता अपितु मनुष्य के विचारों से एवं भावनाओं से भी कर्म संपन्न होता है। वस्तुतः जीवन-भरण के लिए ही किया गया कर्म ही कर्म नहीं है हम जो आचार-व्यवहार अपने माता-पिता बंधु मित्र और रिश्तेदार के साथ करते हैं वह भी कर्म की श्रेणी में आता है। मसलन हम अपने वातावरण सामाजिक व्यवस्था, पारिवारिक

समीकरणों आदि के प्रति जितना ही संवेदनशील होंगे हमारा व्यक्तित्व उतनी ही उच्चकोटि की श्रेणी में आयेगा।

आज के जटिल और अति संचारी जीवन-वृत्ति के सफल संचालन हेतु सभी का व्यक्तित्व उच्च आदर्शों पर आधारित हो ऐसी मेरी अभिलाषा है।

यह ज़रूरी नहीं है कि हर कोई हर किसी कार्य मे परिपूर्ण हो, परन्तु अपना दायित्व अपनी पूरी कोशिश से निभाना भी देश की सेवा करने के समान ही है। संपूर्ण कर्तव्यनिष्ठा से किया हुआ कार्य आपको अवश्य ही कार्य-समाप्ति की संतुष्टि देगा। कोई भी किया गया कार्य हमारी छाप उस पर अवश्य छोड़ देता है अतएव सदैव अपनी श्रेष्ठतम प्रतिभा से कार्य संपन्न करें। हर छोटी चर्या को और छोटे-से-छोटे से कार्य के हर अंग का आनंद लेकर बढ़ते रहना ही एक अच्छे व्यक्तित्व का उदाहरण है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि नयी गूंज एक उच्च स्तरीय पत्रिका है जिसमें विभिन्न विधाओं में उच्चस्तरीय लेखों का अनूठा संग्रह है

आप सभी पत्रिका का आनन्द लें एवं अपनी प्रतिक्रियायें ऑनलाइन या ऑफलाइन भेजें।

नयी गूंज के माध्यम से हमारा आपका संवाद गतिशील रहेगा। आप सभी अपनी सुन्दर व श्रेष्ठ रचनाओं से नयी गूंज को निरन्तर समृद्ध करते रहेंगे इसी विश्वास के साथ।

अंत में मैं सभी सम्पादक मण्डल के सदस्यों एवं रचनाकारों को नयी गूंज पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन के लिए साधुवाद ज्ञापित करता हूं करता हूँ।

आप सभी को हार्दिक बधाई के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद!!

कालिदास ने काव्य के माध्यम से कहा है-

पुराणमित्येव न साधु सर्वं
न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते
मूढः परप्रत्ययनेय बुद्धिः।।

अर्थात् पुरानी ही सभी चीजें श्रेष्ठ नहीं होती और न नया सब निन्दनीय होता है। इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति परीक्षा करके जो हितकर होता है उसी को ग्रहण करते हैं जबकि मूर्ख दूसरों का ही अन्धानुकरण करते हैं।
अस्तु, निर्विवाद रूप से यह सभी स्वीकार करते हैं कि राष्ट्र की रक्षा, का सकारात्मक पक्ष होता है।

प्रकाशन सामग्री भेजने का पता

ई-मेल:goonjnayi@gmail.com

नयी गूंज इंटरनेट पर उपलब्ध है। www.nayigoonj.com पर क्लिक करें।

नयी गूंज में प्रकाशित लेखादि पर प्रकाशक का कॉपीराइट है

शुल्क दर 40/-

वार्षिक: 400/-

त्रैवार्षिक: उपर्युक्त शुल्क-दर का अग्रिम भुगतान 1200/-

को --द्वारा किया जाना श्रेयस्कर है।

नियम निर्देश

1 रचनाएं यथासंभव टाइप की हुई हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क विवरण का उल्लेख अपेक्षित है।

2 लेखों में शामिल छाया-चित्र तथा आँकड़ों से संबंधित आरेख स्पष्ट होने चाहिए। प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिंदी भाषा हो।

3 अनुदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान संपादक मंडल प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।

4 प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मंडल प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेखक की ही होगी।

नई गूँज नियमावली

रचनाएं goonjnayi@gmail. Com ई-मेल पते पर भेजी जा सकती हैं। रचनाएं भेजने के लिए नई गूँज के साथ लॉग-इन करें, यह वांछित है।आप हमारे whatsapp no. 9785837924 पर भी अपनी रचनाएँ भेज सकते हैं

प्रिय साथियों,

नई गूँज हेतु आपके सहयोग के लिए आपका हार्दिक धन्यवाद। आशा है कि ये संबंध आगे भी प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेंगे। आगामी अंक हेतु आप सबके सक्रिय सहयोग की पुनः आकांक्षा है। आप सभी से एक महत्वपूर्ण अनुरोध है

कि आप अपने शोध प्रपत्र निम्न प्रारूप के तहत ही प्रस्तुत करें जिससे कि हमें तकनीकी जटिलताओं का सामना न करना पड़े -

1.प्रकाशन हेतु आपकी रचना के मौलिक होने का स्वतः सत्यापन **रचना प्रेषित करते समय "मौलिकता प्रमाण पत्र" पर हस्ताक्षर करना अनिवार्य है। इसके बिना रचना पर विचार करना संभव नहीं होगा**

2. रचना कहीं पर भी पूर्व में प्रकाशित नहीं होनी चाहिए !

3. आपकी रचनाएँ ए**म.एस. ऑफिस** में टाइप होना चाहिए

4. **फोंट** - कृतिदेव **10**, मंगल यूनिकोड

5. रचनाओं के साथ अपना पूर्ण पता, मोबाइल नंबर, ईमेल तथा पासपोर्ट साइज की फोटो लगाना अपेक्षित है !

6. आप लेख, कविता, कहानी, किसी भी विधा में रचनाएँ भेज सकते हैं !

नई गूँज रचनाओं के प्रेषण सम्बंधित नियम व शर्ते :

एक से अधिक रचनायें एक ही वर्ड-डॉक्यूमेंट में भेजें।

रचनायें अपने पंजीकृत पेज पर दिए गए लिंक इस्तेमाल कर प्रेषित करें।

यदि आप हिंदी में टाइप करना नहीं जानते हैं, आप गूगल द्वारा उपलब्ध करवायी गयी लिप्यान्तरण सेवा का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए Google इनपुट उपकरण लिंक पर जाएँ।

स-आभार

संपादक मंडल

Note:- **प्रत्येक रचना लेखक की स्वयं मौलिक तथा लिखित है! इसमें लेखक के स्वयं के विचार हैं तथा कोई त्रुटि होने पर लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा!**

अनुक्रमाणिका

क्रम संख्या	विवरणिका	लेखक	पृष्ठ संख्या
	लेख –		
1	अक्षर से ही चमकेगी किस्मत	डॉ घनश्याम बादल	1 - 3
2	भगवान भी शीश झुकाते हैं गुरु के सम्मान	नेतपाल यादव	4 - 6
3	पुरुष प्रधान समाज में पुरुषों की भूमिका	डॉ शिवा धमेजा	7 - 11
	कविता		
4	संघर्षपूर्ण जीवन	बृजेश कुमार	12 - 13
5	क्या मैं तुझ में नहीं	अमरेंद्र कुमार	14 – 15
6	श्याम नहीं आए	प्रदीप भारद्वाज	16 - 17
7	शुष्क सी में	डॉ अदिति भारद्वाज	18 – 19
	कहानी		
8	सी. एच. बी इंटरव्यू	रामेश्वर महादेव	20 – 24
	गजल		
9	ग़ज़ल	गिरेन्द्र सिंह भदोरिया	25

	लघु कथा		
10	गिरता जमीर	बृजेश कुमार	26 – 27
11	*मनोकामना*	समीर उपाध्याय	28 - 29
	नारी तुम अबला नहीं सबला हो		
12	रानी रुदावाई	बृजेश कुमार	30 - 31
13	ऐतिहासिक स्थल एक नजर -अचलगढ़ का दुर्ग (राज.)		32 - 33
14	साक्षात्कार- 2022 में आरजे एस बनी आयुषी गोयल		34 - 37

'अक्षर' से ही चमकेगी किस्मत !

ज्ञान का आधार है साक्षरता , भारत में पूर्ण साक्षरता का लक्ष्य अभी भी दूर

डॉ० घनश्याम बादल

ज्ञान आदमी के लिए प्रगति के रास्ते खोलता है, पर जब आदमी पढ़ने लिखने जैसी आधारभूत बात ही न जाने तब कैसे वह अपने व परिवार के लिए अच्छे दिनों के सपने देख सकता है । भारत की हालत पर गौर करें तो जानकर दु:ख होता है कि आजादी पाने के ७५ साल बाद भी तीस करोड़ लोग निरक्षर हैं, करीब 32 करोड़ लोग नाममात्र को पढ़े लिखे हैं, वह भी बस इतना कि अपना नाम लिख लें या कि अंगूठा लगाने की बजाय हस्ताक्षर कर लें ।

विश्व व भारत हर साल 8 सितंबर को साक्षरता दिवस मनाता है मगर यह दिन आता है और चला जाता है इसके बारे में जानने या समझने की जरूरत बहुत कम लोग हैं महसूस करते हैं आज फिर से साक्षरता दिवस है तो साक्षरता दिवस के बारे में जानने के लिए इसके भाव को समझना पड़ेगा

साक्षरता से तात्पर्य अक्षर ज्ञान है यानी हिंदी की दृष्टि से स्वर एवं व्यंजन की पहचान बारहखड़ी और क से लेकर ज्ञ तक के अक्षरों को पहचानना साक्षरता है लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है वास्तव में साक्षरता केवल अक्षरज्ञान या शब्दज्ञान तक सीमित अवधारणा नहीं है । शुरुआती दौर में भले ही ऐसा रहा हो लेकिन आज के परिप्रेक्ष में देखें तो साक्षरता को सीधे-सीधे समझदारी से जोड़ा जाता है । उसी व्यक्ति को आज साक्षर कहा जाएगा जो न केवल लिख सकता है अपितु उसका अर्थ भी न केवल समझ सकता है अपितु उसे अपने सामान्य जीवन में प्रयोग में भी ला सकता है।

देश को आजाद हुए ७५ साल हो गए पर ,आज भी आबादी का बहुत बड़ा भाग निरक्षर है जिसके उनके लिए दो जून रोटी जुटाना भी दूभर है । वैसे तो कितनी ही समस्यायें हैं चारों तरफ पर यदि उनकी जड़ में जाएं तो पाएंगें कि सब समस्याओं का मूल है अशिक्षा यानि निरक्षरता और प्रगति का पहला कदम उठता है ज्ञान से जो हम तक आता से साक्षरता से।

पूर्ण साक्षरता का लक्ष्य दूर :

भारत में साक्षरता की दर व लगभग 80 फीसदी आंकी गई थी , जो विश्व की औसत साक्षरता दर 86 फीसदी से काफी कम है। बेहतर साक्षरता दर से जनसंख्या बढ़ोत्तरी, गरीबी और लिंगभेद जैसी चुनौतियों से निपटा जा सकता है। संविधान में 1965 तक पूर्ण और अनिवार्य शिक्षा का प्रस्ताव रखा गया था पर साढ़े छह दशकों से भी अधिक समय बीत जाने के बावजूद हम अपना लक्ष्य हासिल नहीं कर सके हैं। भारतीय संसद में वर्ष 2002 में 86वां संशोधन अधिनियम पारित हुआ जिसके तहत 6-14 वर्ष के बच्चों के लिए शिक्षा को मौलिक अधिकार का दर्जा दिया गया है। देश में साक्षरता दर बढ़ाने के लिए भारत सरकार के कई कदम उठाने के बावजूद अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी ही है ।

आंकड़ों में साक्षरता :

एक अनुमान है कि यदि साक्षरता की दर ऐसे ही रही तो उसे पूर्ण साक्षरता दर हासिल करने में 2060 तक इंतजार करना पड़ सकता है। नवीनतम आंकड़ों के मुताबिक आज 79 करोड 30 लाख वयस्क निरक्षर हैं इनमें से ज्यादातर महिलायें और बच्चे हैं. करीब छह करोड 80 लाख बच्चे स्कूल से बाहर हैं ।

विश्व के दो करोड़ 80 लाख बच्चे स्कूल नहीं जा रहे हैं । विश्व बैंक के अनुसार भारत में 15 साल से ऊपर के 75 फीसदी साक्षर पुरुषों के मुकाबले महज 51 फीसदी महिलाएं ही साक्षर हैं। जबकि चीन में 97 फीसदी पुरुष और 91 फीसदी महिलाएं, व श्रीलंका में 92 फीसदी पुरुष और 89 फीसदी महिलाएं साक्षर हैं ।

साक्षरता कार्यक्रम :

साक्षरता के लक्ष्य को हासिल करने के लिए सर्व शिक्षा अभियान, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन, मिड-डे-मिल योजना जैसे कार्यक्रम तो हैं लेकिन इन्हें पूरी तरह से लागू करने में सफलता भी दूर का सपना है । ज्यादा चिंता की बात ये है कि कागज भले ही कुछ भी कहे पर यथार्थ में कुछ और ही है । साक्षरता के नाम पर पहले से साक्षरों को बार बार साक्षर बनाने का काम जब तक चलेगा तब तक देष से अषिक्षा का कलंक शायद ही मिट पाए । केवल भारत की ही नहीं वरन्

,अफ्रीका और दक्षिण एशिया में निरक्षरता व अशिक्षा के पीछे गरीबी एक बड़ा कारण है. इसके अलावा एक अन्य प्रमुख कारण वहां के छोटे-छोटे देशों जैसे सोमालिया, चाड, सूडान, कांगो आदि में लंबे समय से जारी हिंसा भी है।

आगे बढ़ती दुनिया :

आज साक्षरता के मद में दी जाने वाली राशि में शिक्षा का हिस्सा मात्र दो प्रतिशत है. विश्वभर में साक्षरता को बढ़ाने के लिये राजनीतिक प्रतिबद्धता कुछ देशों ने दिखाई है जिनमें वेनेजुएला का नाम पहले पायदान पर है ह्यूगो शावेज जब सत्ता में आये तो उन्होंने सबसे पहले क्यूबा के दो लाख शिक्षकों को अपने देश में आमंत्रित किया ताकि वे उनके देशवासियों को शिक्षित कर सकें. शावेज के इस कदम से आज वेनेजुएला में बहुत बदलाव आया , और लोग तकनीक और कृषि के क्षेत्र में आगे बढ़े ।

'ताराअक्षर कार्यक्रम':

साक्षरता की दिशा में स्वयंसेवी संगठन डेवलेपमेंट आल्टरनेटिव ग्रुप का 'तारा अक्षर' कार्यक्रम अब तक आठ भारतीय राज्यों में चलाया जा चुका है। जिनमें देश के कई गरीब राज्य भी सम्मिलित हैं जहां पुरुषों की साक्षरता दर 82.16 फीसदीं व महिलाओं की 65.46 फीसदी ही है । देश की पारिवारिक योजनाओं और जनसंख्या स्थिरता पर महिलाओं की साक्षरता दर कम होने का नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। पर साक्षरता कार्यक्रम ने महिलाओं को विशेष रूप से आकर्षित किया है।

अक्षर ही चमकाएगा किस्मत :

जब तक देश में एक भी व्यक्ति निरक्षर है तब तक न सुख व खुशहाली की कल्पना भी मुश्किल है! विकास की उच्च दर भी निरक्षरता के चलते बेमानी है । आज ''राईट टू एजुकेशन'' जैसे कानूनों को धरातल पर उतारे जाने की बडी ज़रुरत है और कमजोर तबके की शिक्षा पर विशेष बल दिये जाने व साक्षर भारत , सुंदर भारत के नारे को अमली जामा पहनाना ही एकमात्र विकल्प है ।

भगवान भी शीश झुकाते हैं गुरु के सम्मान में* ।

नेतपाल यादव

गुरु प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आने वाला एक महत्वपूर्ण शब्द है जो त्याग श्रद्धा और समर्पण से सृजित होता है इस धरती पर गुरु ही ऐसे हैं जिनके सानिध्य में भगवान कृष्ण राम ,सुदामा ,विक्रमादित्य ,महाराणा प्रताप जैसे कई वीरों ने विभिन्न प्रकार की शिक्षा प्राप्त की हैं और नतमस्तक हुए हैं ।

गुरु का शाब्दिक अर्थ है -बड़ा ,श्रेष्ठ ,आचार्य । गुरु को अलंकृत करने व सम्मान देने के लिए शब्दकोश से जो भी विशेषण युक्त शब्दों का प्रयोग करें , सर्वथा कम पड़ जाएगा क्योंकि गुरु का स्थान ही सर्वोच्च स्थान है इसलिए श्रीमद्भागवत गीता में गुरु को तत्वदर्शी कहा गया ।

यह गुरु और शिष्य बनने व बनाने की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है और गुरु का सम्मान होता आ रहा है, इसके आधार पर हम कह सकते हैं कि गुरु का स्थान समाज में सर्वोपरि है ।

अनूक सच्चे साधक शिष्य गुरु के प्रति सम्मान समर्पित करते आए हैं ,चाहे वह अर्जुन, एकलव्य ,आरुणी या भगवान श्री राम ही क्यों न हो !तभी तो निर्गुण धारा के प्रवर्तक बाबा कबीर सूर तुलसी ने गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊंचा रखा है !उनकी पंक्तियां दृष्टव्य है-

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाँय

बलिहारी गुरु आपने ,गोविंद दियो बताय ।।

गुरु की महिमा का बखान करते हुए बीजक में कबीर ने स्पष्ट कहा है कि-

गुरु की महिमा अनंत है ,

अनंत किया उपगार

लोचन अनंत उघाड़िया,

अनन्त दिखावन हार ।।

उपर्युक्त पंक्तियों को आधार रख कह सकते हैं कि समाज में गुरुओं का स्थान सर्वोपरि हैं, गुरु समाज के मार्गदर्शक रहे हैं ,और अपने ज्ञान और विद्वता से समाज को एक नई रोशनी देते आयें हैं, गुरु के रहते हुए देश, समाज, व्यक्ति अपनी दशा और दिशा को बदलने में समर्थ हो जाता है और उनके कारण ही हमारे अंदर सकारात्मक विचार पैदा होते हैं, समाज में व्याप्त दकियानूसी ख्यालों को समझ पाते हैं, क्योंकि इन चीजों का खंडन कर गुरूजन समाज में रहने वाले लोगों को दिशा निर्देश देते हैं, तथा समाज भी उनके बताए राहों पर चलकर एक स्वच्छ समाज, गाँव और देश का निर्माण करते हैं ।

इन्हीं गुणों को बच्चे सीखते हैं ,समाज के पथ प्रदर्शक हमारे गुरु हैं इसलिए माता को पहला गुरु का दर्जा दिया जाता है गुरु के बिना तो जीवन अपूर्ण है,जीवन में पूर्णता गुरु से ही संभव है ,गुरु ऊर्जामय बनाते हैं इसलिए इनका गुणगान शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है गुरु समाज की एक मशाल हैं जो सदियो से अज्ञानता रूपी अंधकार को दूर करते आए हैं ,गुरु एक सच्चे समाज सुधारक होते हैं और सदियों से समाज के उत्तरोत्तर विकास में महती भूमिका निभा रहे हैं, अपने भगीरथ प्रयास से साक्षरता दर में वृद्धि कर रहे हैं, और समाज में बड़े सम्मान के साथ जी रहे हैं, खूब आदर पा रहे हैं, उनके कार्यो की सराहना भी मिल रही है, नतीजन आज भी अभिभावक अपने बच्चे को गुरु बनते देखना चाहते हैं, पर गुरु बनने की प्रक्रिया कई सीढियां चढ़नी है ,वर्तमान समय में गुरु बनने के लिए ग्रेजुएशन, बीएड और टेट ,कंपटीशन की दौड़ में शामिल होना पड़ता हैं और सफल प्रतिभागी को नियति गुरु बना देती हैं किंतु मेरे विचार से -

जो अपने कर्तव्य से विमुख हो रहे हैं चरित्रहीनता का उदाहरण पेश कर रहे हैं उन्हें गुरु कहना कतिपय उचित नहीं है क्योंकि गुरु के चरित्र को हर बुद्धिजीवी वर्ग बड़े शौक से अपनाते हैं और उनको आदर्श मानकर कुछ लोग उनके जैसा ही बनना चहते हैं ऐसे में अतीत के पृष्ठों को उठाकर पढ़ता हूँ तो बचपन की कुछ बातें बरबस याद आ जाती हैं कि मेरे गांव में एक बिहारी राणा गुरुजी हुआ करते थे ,जब मेरे बरगद टोला में आते थे तो लोग उनको बैठने के लिए ऊँचा आसन प्रदान करते थे और वहाँ उपस्थित लोग नीचे बैठ जाते थे । गाँव के समाज में सम्मान देने का यह तरीका बड़ा ही अनोखा था ,लोग उनकी बातों को बड़े ध्यानपूर्वक सुनते थे ,वे आज हमारे बीच नहीं हैं पर उनकी यादों की जड़े मेरे जीवन में गहरी पैठ बनाई है । उसी शृंखला में रामानंद सर ,चंद्रकांत सर, रामेश्वर यादव सर, इंद्रनारायण सर ,राधेश्याम वर्मा जैसे सरीखे गुरुओं को कोई शिष्य कैसे भूल सकता है ।

शिष्य के हृदय पर सुनिश्चित जगह बनाना ,श्रद्धा के भाव पैदा करना सच्चे गुरु की पहचान होती हैं और ऐसे गुरुओं की पूजा कल भी होती थी ,आज भी होती है और भविष्य में भी होती रहेगी ।ऐसे गुरुजनों के लिए-यही कहा जा सकता है कि-

जब तक सूरज चाँद रहेगा और गंगा में रहेगा पानी ,

तब तक शिष्यों को याद रहेंगी,गुरुओं की कहानी|

मौजूदा परिदृश्य में गुरु की महत्ता में कुछ कमी आ गई है ,आए दिनों गुरु घंटालों से संबंधो की प्राचीन संस्कृतियाँ नष्ट हुई है और एक समूचा वर्ग तार-तार हुआ है जिससे गुरु का सम्मान घट गया है नैतिक शिक्षा अधमरी- सी हो गई है और पुत्र और अभिभावक जैसा रिश्ता भी नहीं रह गया है !गुरु और शिष्य के संबंधों में शिथिलता साफ आइने की भाँति देखी जा सकती हैं ।

आज ज्ञान देने के तरीकों में भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बदलाव हो रहा है पर गुरुओं का स्थान सर्वोपरि ही रहेगा बस जरूरत है उन गुरुओं की जो हमेशा अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं ।।

गुरुर ब्रहमा ,गुरुर विष्णु ,गुरुर देवो महेश्वरः

गुरुर साक्षात पर ब्रहमा ,तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

जिन्होंने गुरु परंपरा का अनदेखा किया है या फिर गुरु का अपमान किया है उनका पतन निश्चित हो गया । हमारे धर्म ग्रंथों में भी गुरु को श्रेष्ठ माना है अतः गुरु का सम्मान सर्वोच्च सम्मान है ।

पुरुष प्रधान समाज में पुरुषों का सम्मान

डा शिवा धमेजा

कितनी खामोश पीड़ा है ये, जिसे चाहे उसे जितना दर्द दे दो, जरा प्रतिक्रिया नहीं होती उसकी ! मानो सुई चुभने जैसा दर्द भी नहीं हुआ हो ! मानो दर्द अब एक आदत बन चुका है बड़ी कुशलता से तलवारों जैसे घावों क़ो सह कर जीने वाला मैं एक पुरुष, फिर मैं पुत्र...

फिर भाई, फिर पति और फिर पिता, हर रूप में एक पुरुष हूँ, जिस पर कभी कुछ लिखा नहीं जाता'! सब कर्तव्यों क़ो निभा कर, खुद क़ो सबके लिए भूला कर जीने वाला मैं सम्मान का पात्र कभी बन नहीं पाता !

ये समाज अक्सर नारी के अबला होने की बात जगह जगह दोहराता है !

ये समाज जहाँ स्त्री पुरुष के लेंगिक भेद क़ो इस हद तक कठोरता से, तीव्रता, संजीदगी से देखा जाता है कि यह भेद अब वास्तविक रूप में विपरीत मोड पर आ गया है यानि सीधे शब्दों में कहें तो पूरी तरह बदल चुकी है अब परिवारों की स्थिति'!

अब समाज का शोषित वर्ग स्त्री नहीं बल्कि पुरुष हो चुके हैं, फर्क केवल इतना है कि पुरुष के पौरुषत्व पर एक ऐसा दायित्व है कि वह कितने ही दर्द चुप रहकर सहन कर लेता है लेकिन इस बात क़ो किसी के सामने नहीं आने देता !

कितने वज्रपात जैसे क्षण चुपचाप मौन रहकर जी लेता है ऊपर से तब भी सहज़ दिखाई देता रहता है और अंदर से एक मासूम बच्चे जैसा.... रोता हुआ, बिलखता हुआ सिसकता हुआ............. ये होता है असली चेहरा हर बेटे का जिसे कोई माँ बाप नहीं देख पाये'!

यहीं होता है असली चेहरा भाई का, जिसे बहन नहीं देख पाती ! यही होता है असली चेहरा एक पति का, जिसे पत्नि नहीं देख पाती !

कैसी भाग्य की विडंबना है ये ,पुत्र से मोह, प्रेम कम हो गया है और

और अपेक्षाएं अधिक हो चुकी हैं'!

वो विवाह करता है, संतान उत्पन्न करता है, अपनी पीढ़ी क़ो बढ़ाने के लिए नहीं बल्कि अपने माता पिता क़ो जीवन का हर सुख दे सके , इस कारण करता है ! पहले उन्हें बहु लाकर देता है फिर घर आँगन क़ो दुनिया की सबसे बड़ी दौलत, ईश्वर का रूप बालक देता है ! उसी दिन से माता पिता की पदवी क़ो और ऊंचाई मिल जाती है, वो दादा दादी बन जाते हैं'!

पर ये सब कुछ करने वाला पुत्र, भाई, पति और पिता कभी भी किसी भूमिका में खरा नहीं उतरता ! एक एक से निस्वार्थ निभाने वाला पुरुष, सबके होते हुए भी बिल्कुल अकेला रह जाता है'! हज़ारों झंझवातो से घिरा होता है, आजीवन के लिए ! चेहरे पर नकाब लगा कर जीता है सहजता का, ख़ुशी का................ नकाब

केवल इसलिए कि वो सबको खुश रख सकें खुद लगातार प्रयासरत रहता है लेकिन असफल हो जाता है ! जो खुद दुःख सह कर केवल सुख देना चाहता है, वह पुरुष सम्मान के विषय में

अपने घर, परिवार से कुछ नहीं पाता, खाली रह जाता है ! जो सबकी समझता है उसे कोई नहीं समझता !

आज समाज, परिवार हर कोई पुरुष के पुत्र, भाई, पति या पिता हर किसी भूमिका में कोई न कोई बुराई ही बताते रहते हैं !

नारी अपने रूपो में ईश्वर तुल्य हो जाती है, ज़ब वह माँ बन जाती है तो क्या ठीक इसी तरह पुरुष भी पिता बन जाने के बाद ईश्वर तुल्य नहीं हो जाते ! क्या हमें संभालने वाले ईश्वर परमपिता नहीं कहलाते ! हम सब भी तो अपने पिता से वही पाते हैं'!

तो यदि माँ महान है तो फिर पिता क्यों नहीं'!

अपने जीवन क़ो लगाकर, उसे पूरी तरह जिम्मेदारियों में ही जीते हुए बिता कर, पिता अपनी हर जिम्मेदारी क़ो पूरा करते हैं !

सुनिए एक अंतर्मन क़ो अंतर्मन के शब्दों से

एक पिता -

कितना दर्द है अंदर....

लगता है कि इन सब क़ो पीछे छोड़ दूँ, पर तुम सामने आ जाते हो, तुम मेरा पहला फ़र्ज़ हो मेरा दायित्व मेरी जिम्मेदारी हो, तुम्हें कैसे छोड़ दूँ तुम्हें जन्म दिया है मैंने !

नहीं कर सकता तुम्हारे साथ अन्याय चाहे मेरे साथ कितना ही क्यों न हो जाये तुम पर उसकी आँच तक नहीं आने दूंगा !

मैं पिता बोल रहा हूँ

एक पुत्र -

सब करता हूँ पर कोई खुश नहीं ! खुद क़ो गिरवी रख कर अक्सर इनकी खुशियाँ खरीद रहा होता हूँ, बाज़ारो में लेकिन अब तक ऐसा कुछ ना मिला जिसे पाकर कोई भी संतुष्ट हुआ हो"!

सब कुछ किया पर कोई संतुष्ट नहीं हुआ, कभी भी नहीं ! हाँ शिकायत जरूर थी हर किसी क़ो !जहाँ भी खड़ा हो जाता हूँ खुद क़ो अपेक्षाओं से घिरा पाता हूँ !

घर से और घर के हर सदस्य से बहुत प्रेम करता हूँ पर मुझसे..........कौन ?

एक पुत्र बोल रहा हूँ

एक पति -

मैं पुरुष ज़ब एक पति बन जाता हूँ ! एकदम से ही खुद क़ो किसी के प्रति जिम्मेदार पाता हूँ ! ये भाव हर पति के अंदर आ जाते होंगे ! जो आपके साथ सात फेरे लगाकर अपने परिवार क़ो छोड़कर चली आई है, उस पत्नि के हर सुख दुःख का जिम्मेदार बन जाता हूँ !

मैं उसके लिए कुछ भी करुँ तो स्वीकार्य नहीं किया जाता.......

ज़ब अपने घर की बेटी का विवाह किया जाता है तो दामाद से अपेक्षा की जाती है कि बेटी के हर सुख दुःख का ख्याल रखेगा!

और ज़ब अपने घर के बेटे का विवाह किया जाता है तो बेटा, पत्नि का ख्याल रखें यह बात किसी क़ो अच्छी नहीं लगती !

ये अदृश्य भेदभाव कैसा ?

करते हम खुद हैं और खुद ही बेखबर हैं ?

एक भाई -

मैंने तुमसे कभी कोई भेदभाव नहीं किया बहन ऐसा हो भी कैसे सकता है ! पर हर सम्बन्ध में दिखाई देने वाली बातें अलग होती हैं ! पत्नि की फ़िक्र व्यक्त होकर दिख जाती है ! बहन के लिए फ़िक्र मन में होती है ! तुम कैसे सोच लेती हो कि सब कुछ पहले जैसा नहीं !

सच ये है कि केवल देखने के नज़रिये बदल दिए हैं !ना जाने क्यों विश्वास नहीं होता, तुम भी ना समझ पाई मुझे !

एक भाई बोल रहा हूँ

देखिए कैसी चक्की में पीस रहा है, वो जिसे हम पलकों पर ऱखना चाहते हैं ! रिश्तों क़ो निभाते निभाते कैसे हार गया है वो

एक पुरुष जो हर समय सामान्य बना दिखता है इसकीमन की स्थिति देखिये फिर"! बताइयेगा

ये समाज क्या अब भी पुरुष प्रधान है, जिसे परिवार का मुखिया कहकर हमने उसे ही तोड़ दिया है, इतना भार डाल दिया है उस पर कर्तव्यों का.......

और अधिकार कोई नहीं उसका ?

संघर्ष पूर्ण जीवन

बृजेश कुमार

संघर्षों को जिसने
जीवन में स्वीकार किया है,
उनके जीवन में हीं
सुन्दर कमल खिला है,
विपत्ति में जिसने
हँसना सीखा है,
उनका जीवन देखो
उतना हीं निखरा है,
धारा विपरीत रही हो चाहे
फिर भी ज़ो तना पडा है,
नाविक की अग्नि परीक्षा में
ज़ो बिल्कुल खरा उतरा है,
उसके जीवन में बाधाएं
रास्ता दिखलाया करती हैं,
नव सृजन के लिये उसे
हर पल तैयार किया करती है!
जैसे कोमल फूलो कों
काँटों नें तैयार किया हो,

नई चेतना, नई उमंग भर

जीवन कों खुशहाल किया हो,

उनका जीवन सुखमय होता,

जिन्होंने संघर्ष कों स्वीकार किया है!

क्या मैं तुझमें नहीं।

कौन कहता है कि तू मुझमें नहीं,

झांक जरा अपने भीतर और सच २-बता

तेरे दिल की धड़कनों जैसा क्या मैं तुझमें नहीं।

लोगों ने मुझसे कहा कई दफा कि तू मेरा नसीब है,

तो एक बात जरा सच २-तू भी बता,

हाँथों की कुछ लकीरों जैसा क्या मैं तुझमें नहीं।

तू पूछती रहती है ये मुझसे हर दफा,

बहुत अकेलापन लगता होगा अकेले रहने में

तो एक बात जरा सच २-तू भी बता,

सभी के साथ रहते हुए भी तूझे अकेला महसूस कराने

वाले उस अकेलेपन जैसा क्या मैं तुझमें नहीं।

लोग कहते हैं ये अक्सर मुझसे कि तू मेरी

कभी न छूटने वाली आदत सा बन गया है,

तो एक बात जरा सच २-तू भी बता

लोगों को जो आसानी से दिख सके

कभी कम न होने वाली वो मोहब्बत क्या मुझमें नहीं।

लोगों ने कहा मुझसे कि

तू मेरा हमनवा, हमसफ़र लगने लगा है,

तो एक बात जरा सच २-तू भी बता

जीवन के हर सफर में तेरे साथ हमेशा चलने वाला

तेरा हमसाया जैसा मैं तुझमें नहीं|

पर लोगों का क्या है, कुछ तो लोग कहेंगे

पर मुझे एक ही बात कहना है,

जब से तुम मेऽरी जिंदगी में आये हो,

मेरे जैसा कुछ भी मुझमें नहीं|

अमरेंद्र कुमार

श्याम नहीं आए..

प्रदीप भारद्वाज (दीप)

नित्य प्रति राह तकूं,
श्याम नहीं आए सखी
मोसे क्या भूल भई
कोई तो बताए सखी

तन मन बिसराए हुए
कुंजन में भटक रही
श्याम बिना कोई गंध
मोए ना सुहाए सखी

गगन देख मेघश्याम
मन मयूर पुलकित है
श्याम छटा सुमिरन कर
नयन नीर आए सखी

जमुना के तट पर सब
सखियां किलोल करें
नदिया की कल कल भी
विरह गीत गाए सखी

कोई मेरे श्याम को
संदेसौ भिजवाए देओ
शाम ढले श्याम बिना
दीप ना जलाए सखी

शुष्क सी मैं

अदिति भारद्वाज

हर तरफ आंसू थे,

हर तरफ सिसकियां,

अचंभित सी, बैठी थी

मैं उस शव के पास।

नहीं दिखाई कभी हमदर्दी जिन्होंने

वो भी सब आंसू बहा रहे थे

खंबे सी जड़ बैठी थी,

मैं उस शव के पास।

उम्र भर कांटे चुभाते रहे जो

फूलों से लादने आ रहे आज

मगर निर्जीव सी बैठी थी

मैं, उस शव के पास।

अब क्यों दिखावा करते हैं वो

जिन्होंने मारने की साजिशें रचीं

यह सोचती, निष्प्राण सी,

बैठी थी मैं उस शव के पास।

हर दिन कई लोग मरते हैं तो

अकेलेपन का जन्म होता है

हाथों में नई लकीरें खोजती बैठी थी

शुष्क सी मैं उस शव के पास।

अंततः बेड़ियां टूटीं आशा-निराशा,

वेदना-संवेदना के इस चक्र का

ही मान, तृप्ति से मुस्कुराती सी,

बैठी थी मैं, 'अपने' शव के पास।।

सी.एच.बी. इंटरव्यू

रामेश्वर महादेव

राम विज्ञापन आया है,

सहायक प्राध्यापक पद

हेतु विकास ने कहा।

पद पर्मानेंट है या काॅन्ट्रैक्ट बेसिस पर राम ने पूछा।

काॅन्ट्रैक्ट बेसिस पर विकास ने कहा।

"पर्मानेंट पद होता तो भी क्या फायदा विकास, मेरी हैसियत नही पैसे भरने की।"

"मतलब, मैं नही समझा राम।"

धीरे,धीरे सब समझ आएगा,यह शुरुआती दौर है तुम्हारा।

"राम , मैंने एम . ए. ,एम .फिल.,सेट,पीएच-डी आदि शिक्षा हासिल की है । मैं गुणवत्ता के बलबुते पर सहायक प्राध्यापक जरूर बनूंगा, विकास ने कहा।"

विकास, हमारे पहले भी बहुत से छात्र ने नेट, सेट, पीएच-डी आदि तक शिक्षा प्राप्त की हैं, लेकिन वे सहायक प्राध्यापक नही बन पाए।

आख़िर क्यों राम?

वही कारण,पैसा और राजनीतिक पहचान न होना।

पैसा और राजनीतिक पहचान किस लिए? सहायक प्राध्यापक बनने के लिए।

मुझे कुछ भी समझ नही आ रही तुम्हारी बात।

जो है साफ़- साफ़ बता दो राम।

"तो फिर सुनो विकास,सहायक प्राध्यापक बनने के लिए कम से कम पचास लाख लगते है; इसी के साथ विधायक, सांसद की सिफ़ारिश भी। एक-दो काॅलेज में गुणवत्ता के बलबुते पर सहायक प्राध्यापक पद का चयन होता होगा, बाकी सब जगह पैसा और सिफ़ारिश चलती है।"

राम, मैं कहाॅं से लाऊं इतना पैसा।

“विकास, मेरी भी परिस्थिति तुम्हारे जैसी है, मैं भी इतने पैसे नही भर सकता । मैं घर और खुद का अपना शरीर बेच दूं तो भी मैं पचास लाख रुपए इकट्ठा नही कर सकता । मां, बाप को मुझ से बहुत उम्मीद है; लेकिन मैं पूरी नही कर पा रहा हूं, इसका सबसे ज़्यादा दु:ख है। मैं उन्हें सच बात बताकर और दु:खी नही करना चाहता।“

मेरी भी वही अवस्था है राम। किंतु हम संघर्ष जारी रखेंगे । बदलाव जरूर होगा, आने वाले समय में। वह काॅन्ट्रैक्ट बेसिस के पद का फार्म कब भरना है राम?

फार्म भरने की अंतिम तारीख क्या है ?

दो दिन बाकी है, लेकिन हम जल्द भर डालेंगे राम।

कल ही फार्म भर डालेंगे विकास,लेकिन एक बात कहनी थी।

बताओ राम।

तू मुझे नकारात्मक विचार का कहने की संभावना है।

बता तो सही।

“सी.एच. बी. इंटरव्यू के लिए भी सिफ़ारिश लगती है, यह बात मेरे सुनने में आयी है, सच क्या है मुझे भी मालूम नही।“

राम, सी. एच. बी. इंटरव्यू के लिए सिफ़ारिश, यह सच नही हो सकता।

अच्छा। तो फिर हम अच्छी तरह इंटरव्यू की तैयारी करेंगे। पर्मानेंट पद नही तो ना सही लेकिन सी. एच. बी. पद तो हासिल करेंगे विकास।

फार्म भर दिया,देखते- देखते इंटरव्यू की तिथि आई ओर एक जगह के लिए पच्चीस फार्म आए।

राम , इंटरव्यू की तिथि तेरह अगस्त है। तुम्हारी तैयारी अच्छे से हुई है न, विकास ने पूछा।

हां, हुई है देखते है क्या होता है विकास?

इंटरव्यू के दिन काॅलेज में जल्द जाना होगा राम, विकास ने कहा।

कितने बजे विकास?

सुबह आठ बजे।

जी। जरूर।

विकास कॉलेज बढ़िया है । हमें पढ़ाने का अवसर मिला तो हम अच्छी तरह तैयारी करके छात्र को पढ़ाएंगे।

हां, वह तो करेंगे राम।

लेकिन विकास, दो जगह के लिए पच्चीस फार्म है।

हमारी तैयारी है ओर पात्रता भी,तो हमारा ही चयन होगा राम। फार्म चाहे कितने भी क्यों न हो।

विचार करना छोड़ म,अभी तेरा ही नंबर है साक्षात्कार के लिए। बेस्ट ऑफ लक तुझे।

सेवक ने जोर से कहा,"राम शिरवाडकर नामक छात्र है तो इंटरव्यू हॉल में जाए।"

"राम हॉल के दरवाजे के पास गया ओर कहा, अंदर आऊं सर।"

सर ने काजू,बादाम खाते -खाते कहा-" आइए,

बैठिए। आपका शुभ नाम?"

राम शिरवाडकर।

आपकी शिक्षा?

एम.ए.,एम फिल,सेट,नेट, पीएच-डी आदि हूं।

अच्छा । आपको कितने साल का पढ़ाने का अनुभव है?

कुछ भी नही सर।

आप में कमियां है शायद।

सर, मुझे मेरी कमियां बताइए, मैं उस में सुधार करूंगा।

"मुझ से ज़बान लड़ाता है; यही कमियां है तुम्हारी।"

मतलब, मैं नहीं समझा सर।

"तेरा इस कॉलेज में और मेरे पहचान के किसी भी कॉलेज में चयन नही होने दूंगा मैं । समझा तू। निकलो बाहर,हो गया तुम्हारा इंटरव्यू।"

जी सर।

राम बाहर आया ओर जोर से सुकुन की सांस ली।

विकास ने पूछा,"राम कैसा रहा इंटरव्यू।"

अच्छा रहा,राम ने कहा।

विषय संबंधित क्या पुछा राम?

"बहुत कुछ पूछा, तैयारी की थी वह सार्थक हुई।"

विकास तुझे भी बेस्ट ऑफ लक।

आखिरकार इंटरव्यू संपन्न हो गया। सब अपने -अपने घर जाने लगे थे। कैंपस में चर्चा हो रही थी कि यह जगह पहले से मैनेज थी। इस नौकरी के लिए कुछ बच्चों ने विधायक, सांसद, मंत्री आदि की सिफ़ारिश लायी थी, उन्हीं का चयन होना निश्चित है। यह सुनकर राम और विकास निराश हो गए।

राम! तुम ने जो कहा था, वही सच हुआ।

जाने दो विकास,हम फिर से तैयारी करेंगे।

"तैयारी करके क्या फायदा राम,वे गुणवत्ता को कहा महत्व देते हैं, वे जाति- बिरादरी,सिफ़ारिश आदि को देखते हैं। उन्होंने मेरे रिसर्च पेपर और सृजनात्मक साहित्य को देखा तक नही। राम हम सहायक प्राध्यापक कभी नही बन सकते।"

ऐसी नकारात्मक बातें मत करो विकास, हमें इन व्यवस्था को बदलना है।

"कैसे बदलेंगे व्यवस्था? शिक्षण संस्था या तो राजनेता की है या उनके पहचान वालों की । वे ही लोकसभा, विधानसभा के सदस्य हैं, शिकायत करें तो किनके पास।"

विरोधी पक्ष के पास।

"सभी की मिली भगत है राम। शिक्षा को उन्होंने व्यवसाय बना रखा हैं। उदाहरण के रूप में जैसे की रयत शिक्षण संस्था, पीपल एजुकेशन संस्था आदि जो आदर्श संस्था थी। उन संस्था के उद्देश्य को, विचार को खत्म किया वर्तमान व्यवस्था ने।"

विकास,हम जैसे सुशिक्षित व्यक्ति ने हार मान ली तो कैसे होगा।

“सही है राम तेरा। हम भ्रष्ट व्यवस्था के ख़िलाफ अंत तक लड़ेंगे। हमारी जो अवस्था हुई है वैसी आनेवाली पीढ़ी की नही होने देंगे।“

राम, हम सरकार से मांग करेंगे कि सभी राज्यों की शिक्षक भर्ती आयोग के माध्यम से ही हो। जब तक हमारी मांग पुरी नही होती तब तक हम नि:स्वार्थ भाव से निरंतर। लड़ते रहेंगे । जब आयोग के माध्यम से सहायक प्राध्यापक पद का चयन होगा, तब शिक्षा का स्तर भी अच्छा होगा। ओर महात्मा फुले, डाॅ. बाबासाहेब आंबेडकर , राजर्षि शाहू महाराज, कर्मवीर भाऊराव पाटिल आदि महापुरुषों का शिक्षण विषयक अधूरा सपना पूरा होगा....

एक ग़ज़ल

गिरेंद्रसिंह भदौरिया

आग पी तो गया अब पचा कर बता।
और फिर जिन्दगी को बचा कर बता।।

दी सभी को अगर नौकरी तो सुनो ,
मैं कहाँ का हुआ यार चाकर बता।।

हाथ मेंहदी से रचना करिश्मा नहीं,
नीम की पत्तियों से रचाकर बता।।

पेड़ - पौधे झुकाना अलग बात है ,
पत्थरों की अकड़ को लचाकर बता।।

उँगलियों पर नचाता रहा देश को,
एक पुतली खुले में नचा कर बता।।

दूसरों को कुदाता रहा आग में ,
आज तू ये करिश्मा चचा कर बता।।

गिरता जमीर

मास्टर रोशन लाल जी पेशे से सरकारी अध्यापक थे! वे एक ईमानदार और धार्मिक किस्म के व्यक्ति थे! उनका मानना था कि ईश्वर के द्वारा जो भी दिया गया है उसमें संतुष्ट रहना! जिस कारण वे अपने गृहस्थ जीवन में सुखपूर्वक तथा आनंदमय रहते है! उनके 3 पुत्र तथा दो पुत्रियां थी! मास्टर रोशन लाल जी ने अपनी सामर्थ्य अनुसार सबको खूब पढ़ाया जिस कारण बड़े दो बेटों की सरकारी नौकरी लग गई! बड़ा बेटा सरकारी विभाग में बाबू बन गया तथा दूसरा बेटा पेशे से अध्यापक ही बन गया!

अब मास्टर रोशन लाल जी ने अपनी दोनों पुत्रियों का विवाह बड़े धूमधाम से किया तथा कुछ समय बाद तीनों बेटों की भी शादी कर दी!

बड़ा बेटा रमेश जो कि सरकारी विभाग में बाबू था वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ शहर चला गया क्योंकि उसकी नौकरी शहर में थी! सबसे छोटा बेटा ज्यादा पढ़ा नहीं था तो उसने भी दिल्ली जाकर छोटे-मोटी कंपनी में काम करने लग गया!

बीच वाला सुरेश जो कि अध्यापक था उसकी नौकरी पास के गांव में थी! तो पिताजी अब उसके साथ ही रहने लगे! जैसे- जैसे दिन ढ़लते हैं तीनों भाई खूब तरक्की करते हैं उनके पास जमीन- जायदाद, पैसे की कोई कमी नहीं होती है!

जिस कारण मास्टर रोशन लाल जी का जीवन और भी सुखमय हो गया! उनके रिटायरमेंट के बाद जो तनख्याह आती! उसे मास्टर रोशन लाल जी धार्मिक कार्यों तथा असहाय व्यक्तियों की मदद करने में लगा देते! मास्टर रोशन लाल जी अपने बुढ़ापे के दिनों में सभी बच्चों को इमानदारी से जीवन जीने तथा संतोषी होने की सीख देते रहते थे!

मास्टर रोशन लाल जी के नाम तीन दुकानें तथा एक मकान था! उनका कहना था कि तीनों भाई एक-एक दुकान ले लेना! मकान तो उसी का रहेगा जो इस गांव में रहेगा!

इस कारण बड़े और सबसे छोटे भाई ने भी अपने पिताजी के द्वारा किए गए बंटवारे का कोई विरोध नहीं किया और पिता जी से कहा – आपने जो भी निर्णय लिया है वह बिल्कुल ठीक है!

क्योंकि जो बेटा गांव में रहेगा वही मकान का मालिक होगा! दोनों भाइयों ने सुरेश के लिए मकान दे दिया और सभी अपने- अपने जीवन में आनंद पूर्व करने लगे! अचानक मास्टर रोशन लाल जी की तबीयत खराब हो जाती है और उनका बेटा सुरेश भाप जाता है कि पिताजी ज्यादा दिन के नहीं है! वह तुरंत की दुकान के कागज तैयार करवाता है और अपने पिताजी से कहता है कि कोई आवश्यक दस्तावेज है जिस पर आपके हस्ताक्षर होने हैं अतः आप इन दस्तावेजों पर हस्ताक्षर कर दीजिए! मास्टर रोशन लाल जी हस्ताक्षर कर देते हैं!

जैसे ही मास्टर रोशन लाल जी की मृत्यु होती है तो तीनो भाई तथा समस्त रिश्तेदार इकट्ठा होते हैं! सभी रिश्तेदार तथा गांव के मुखिया तीनों भाइयों को कहते हैं कि मास्टर रोशन लाल जी नें तीनों के लिए एक एक दुकान दी है! आप अपनी-अपनी दुकानों को संभालिए!

तभी अचानक सुरेश कहता है कि किसकी दुकाने! पिताजी ने यह दुकाने तो मेरे नाम पहले ही कर दी थी! इन दुकानों पर अब मेरे सिवा किसी का हक नहीं है!

गांव के मुखिया सुरेश को समझाते हैं लेकिन वह संपत्ति के लिए इतना गिर जाता है कि अपने राम जैसे भाइयों को सदा के लिए अपने से दूर कर देता है और सदा- सदा के लिए समाज में अपने आप को मुंह दिखाने के लायक नहीं रहता है! इसलिए कहते हैं कि व्यक्ति का जब जमीर गिरता है तो वह सबसे पहले अपनी हितेषीयों को ही पराया कर देंता है!

बृजेश कुमार

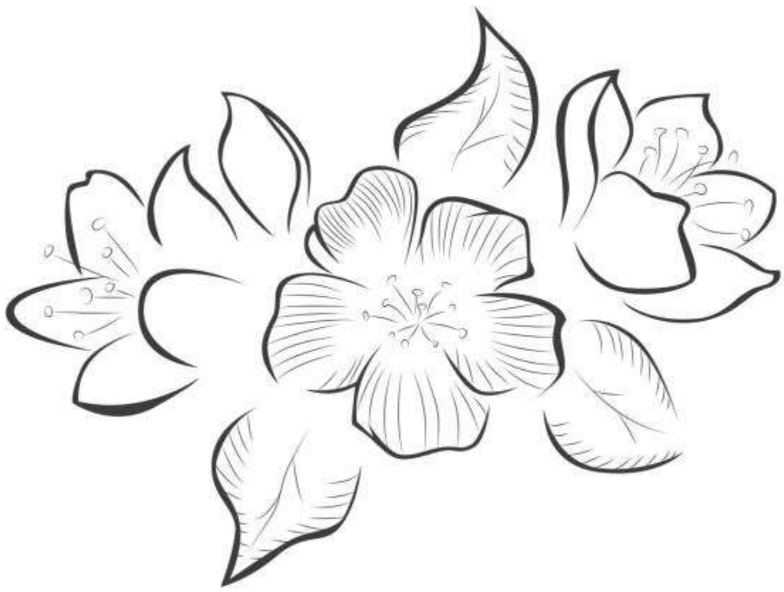

मनोकामना

समीर उपाध्याय

सुमित्रा अपने पति के साथ लड्डू गोपाल के मंदिर में प्रसाद का भोग चढ़ाकर सभी दर्शनार्थियों को प्रसाद देती है।

एक बूढ़ी औरत ने पूछा- “बेटी तुम बड़ी श्रद्धालु दिखती हो। क्या कोई व्रत रखा है?”

सुमित्रा- “मां, आशीर्वाद दीजिए कि भगवान अब एक मनोकामना पूरी कर दे। बेटे की किलकारी के बिना आंगन सूना लगता है।“

बूढ़ी औरत- “बेटी, क्या अभी तक तुम्हारी गोद भराई नहीं हुई?”

सुमित्रा- “नहीं नहीं मां, मैं तो दो बेटियों की मां हूं। बस अब एक बेटे की कमी है। गर्भ रहता ही नहीं। अब लड़के के लिए दवाई शुरू की है। इसलिए लड्डू गोपाल को भोग चढ़ाने का व्रत रखा है।“

बूढ़ी औरत- “बेटी, बुरा मत मानना। बेटे के लिए इतना तप और तपस्या करती हो, लेकिन बुढ़ापे का सहारा बनेगी बेटियां ही।“

सुमित्रा- “मां जी, ऐसा क्यों बोल रही है? बेटियां तो पराया धन होती हैं। कल ब्याह कर अपने ससुराल चली जाएगी। वंश को बढ़ाने वाला भी तो कोई चाहिए न? और बेटा होगा तो बुढ़ापा सुधर जाएगा।“

बूढ़ी औरत सुमित्रा की बात सुनकर हंसने लगी। उन की हंसी को देख कर सुमित्रा को थोड़ा आश्चर्य हुआ। उसने बुड्ढी औरत से पूछा- “आप ऐसे क्यों हंस रही है?”

बुड्ढी औरत- “जब मेरी गोद भराई नहीं होती थी तब मैं भी तुम्हारी तरह बेटे के लिए तरसती थी। कईं मन्नते भी रखी थी। ऊपर वाले ने एक नहीं चार-चार बेटे दिएं।“

सुमित्रा- “आप तो बड़ी भाग्यवान है।“

बूढ़ी औरत- “कैसे भाग्यवान कहूं अपने आप को? बुढ़ापे में ही पति-पत्नी को एक दूसरे के सहारे की ज़रूरत पड़ती है। लेकिन लड़कों ने हम दोनों को अलग कर दिया है।“

सुमित्रा- “मतलब?”

बूढ़ी औरत- “एक भी लड़का हम दोनों को साथ रखने के लिए तैयार नहीं है। इसलिए बड़े दो लड़कों ने मेरे पति की छ: छ: महीने की बारी रखी है और छोटे दो लड़को ने मेरी। जब एक-दूसरे की याद आती है तब दोनों मोबाइल पर बातचीत कर मन को हल्का कर लेते हैं।“

रानी रुदावाई

भारतीय इतिहास वीरों के साथ-साथ वीरांगनाओं के युद्ध कौशल, वाकपटुता, सौंदर्य तथा अदम्य सहास से भरा पड़ा है! इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब भी किसी राज्य पर मुसीबत आई तब -तब महारानियों नें भी अपने अदम्य साहस के साथ मुसीबतों का सामना किया है! जैसे – रानी लक्ष्मीबाई, माता जीजाबाई, अहिल्याबाई होलकर आदि! ऐसे ही इतिहास के पन्नों में एक और नाम है – रानी रुदावाई!

रानी रूदाबाई पाटन राज्य से कर्णावती के राजा राणा वीर सिंह वाघेला की पत्नी थी! कर्णावती क्षेत्र वर्तमान में गुजरात में स्थित है! रानी रूदाबाई जोकि अत्यंत सुंदर थी! इसके साथ- साथ वह युद्ध कौशल में निपुण तथा अदम्य साहस की धनी थी! कर्णावती राज्य पर अनेकों तुर्की हमले

हुए! लेकिन कोई भी आक्रांता अपने मकसद में कामयाब नहीं हो पाया! सन 1497 मे सुल्तान बेघारा ने 40,000 से अधिक फौज के साथ कर्णावती राज्य पर हमला कर दिया ! लेकिन राणा वीर सिंह बघेला की सेना के सामने सुल्तान बेघारा की फौज 2 घंटे भी नहीं रुक पाई! सुल्तान बेघारा को अपनी जान बचाकर भागना पड़ा! सुल्तान बेघारा का कर्णावती राज्य पर आक्रमण का कारण रानी रुदावाई थी! वह रानी की सुंदरता पर मोहित था तथा उसे अपने हरव में रखना चाहता था!

कुछ समय पश्चात कर्णावती राज्य का एक साहूकार सुल्तान बेघारा से जा मिला और उसे राज्य की सारी गुप्त जानकारियां से अवगत करा दिया! जैसे ही उसे सारी गुप्त जानकारियां प्राप्त हुई तो सुल्तान बेघारा नें कर्णावती क्षेत्र पर आक्रमण कर दिया! इस आक्रमण में राणा वीर सिंह बघेला वीरगति को प्राप्त हो गए!

जैसे ही रानी रुदाबाई को यह सूचना मिली उनके मन को एकदम धक्का सा लगा! लेकिन उन्होंने इस समय स्वयं को संभाला ! और 2400 धनुर्धारी वीरांगनाओं की महल के अंदर छावनी बनाई! उन्हें अपने महल के ऊपर शत्रु सेना पर टूट पड़ने के लिए तैयार किया!

इधर रुदावाई ने अपने दूत को सुल्तान बेघारा के पास निकाह प्रस्ताव लेकर भेजा! सुल्तान बेघारा वासना में अंधा होकर 10,000 सैनिकों के लश्कर के साथ महल की ओर बढ़ा! जैसे ही रानी रुदावाई ने देखा कि सुल्तान बेघारा महल की ओर आगे आ रहा है! उन्होंने सुल्तान बेघारा को अपने महल में आने को कहा और दूसरी तरफ अपनी धनुर्धारी वीरांगनाओं को लश्कर सेना पर टूट पड़ने का इशारा कर दिया! जैसे ही सुल्तान बेघारा रानी रुदाबाई के महल में कदम रखता है! रानी अपना खंजर निकालकर सुल्तान बेघारा के सीने में उतार देती है! उधर धनुर्धारी वीरांगनाओं ने सारी लश्कर सेना को अपने बाणों से छलनी कर दिया!

सुल्तान बेघारा को मारकर रानी रुदाबाई नें सुल्तान बेघारा के सिर को धड़ से अलग कर पाटन राज्य के बीच टंगवा दिया और चेतावनी देते हुए कहा जो भी पाटन राज्य तथा हिंदू महिला पर बुरी दृष्टि डालेगा, उसका यही हाल होगा!

जब युद्ध समाप्त हो गया तब रानी रुदाबाई ने जल समाधि ले ली! ताकि कोई अन्य पुरुष उन्हें अपवित्र करने की कोशिश ना करें! धन्य है भारत भूमि पर उत्पन्न होने वाली ऐसी वीरांगनायें! जिन्होंने अपनी जान से पहले अपनी मातृभूमि को चुना तथा उसकी रक्षार्थ प्राण उत्सर्ग कर दिया! इसलिए सच ही कहा गया है नारी अबला नहीं सबला है, यदि वह करने की ठान ले!

आबू दुर्ग (अचलगढ़)

- परमारो का मूल राज्य आबू और उसके निकटवर्ती प्रदेश थे! जिस कारण आबू का पुराना किला परमार शासकों द्वारा बनवाया गया!
- चंद्रावती उनकी राजधानी थी! यहां से उनकी विविध शाखायें मारवाड़, सिंध, गुजरात का कुछ भाग तथा मालवा में फैली, जहां उनके पटक राज्य स्थापित हुए!

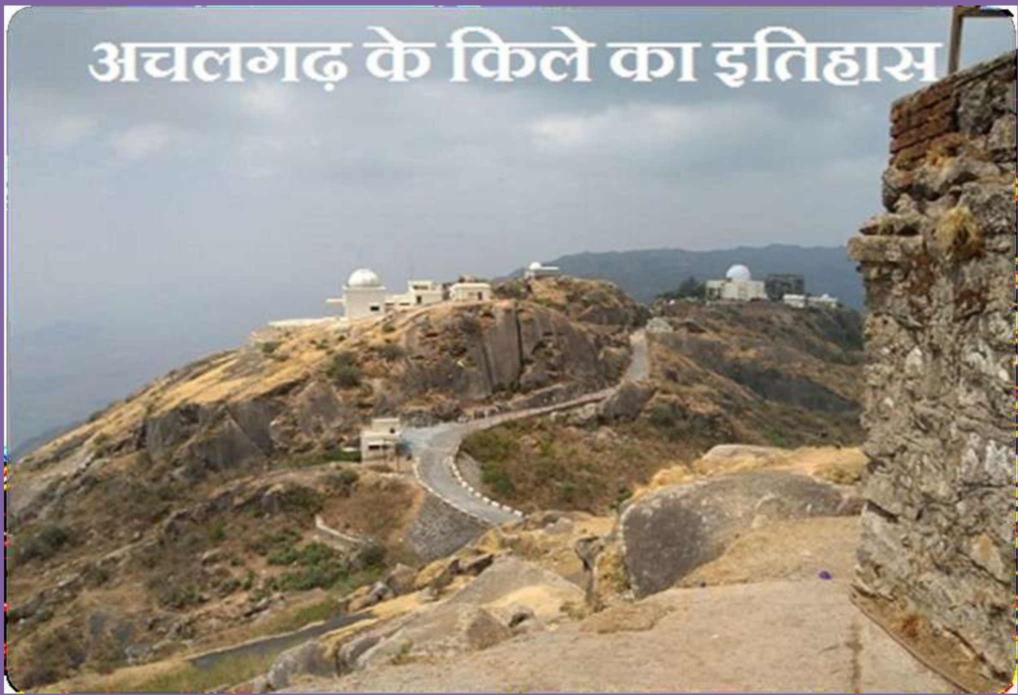

- मेवाड़ के महा पराक्रमी महाराणा कुंभा ने इसी प्राचीन दुर्ग के भग्नावशेषों पर एक नये दुर्ग का निर्माण करवाया जो अचलगढ़ के नाम से विख्यात हुआ!
- कर्नल टॉड ने आबू पर्वत को हिंदू ओलम्पस (देव पर्वत) कहां है, क्योंकि इस पर्वत माला पर अनेक देव मंदिर विद्वान हैं!
- आबू पर्वत की अधिष्ठाता देव अचलेश्वर महादेव ही हैं! इस मंदिर में शिवलिंग ने होकर केवल एक गड्डा है, जिसे ब्रहम खंड कहा जाता है!
- आक्रांता महमूद बेगड़ा द्वारा शिवप्रिया पार्वती तथा उनके वाहन नंदी की प्रतिमा को खंडित किया गया, जो आज भी खंडित अवस्था में विद्यमान हैं!

- कहा जाता है कि महमूद बेगड़ा जब अचलेश्वर के नंदी सहित अन्य देव प्रतिमाओं को खंडित कर लौट रहा था तब मधुमक्खियों का एक बड़ा दल आक्रमणकारियों पर टूट पड़ा! जिस कारण यह स्थान आज भी भंवराथल के नाम से प्रसिद्ध है!
- अचलेश्वर महादेव के पास ही एक मंदाकिनी कुंड है!
- मंदाकिनी कुंड से पूर्व की तरफ परमार राज्य के संस्थापक आदि परमार की पाषाण प्रतिमा स्थापित है, जिसमें वह अपने तीर से भैसे का रूप धारण किए राक्षसों का वध कर रहा है, जो रात्रि के समय अग्निकुंड का पवित्र जल पी जाया करते थे!
- कर्नल टॉड ने इस पाषाण प्रतिमा को मूर्ति कला का अद्भुत नमूना बताया है!
- कर्नल टॉड के अनुसार –" जैत ने अपनी राजभक्ति अपनी पुत्री ' बुद्धि मती ऐच्छीनी' सहित दिल्ली के अंतिम राजपूत सम्राट पृथ्वीराज को समर्पित कर दी थी!

अन्य दर्शनीय स्थल :-

- यहां पार्श्व नाथ का जैन मंदिर है, जिसे मांडू के श्रेष्ठी ने बनवाया था! कर्नल टॉड ने इस मंदिर के कलात्मक स्तंभों को अजमेर के प्राचीन मंदिर के स्तंभों से सादृश्य बताया है!
- राणा कुंभा व उसके पुत्र उदा की मूर्तियां – सावन भादवा तथा भंवराथल स्थान दर्शनीय!
- सिरोही के महाराव मानसिंह का स्मारक यहां के प्रमुख ऐतिहासिक स्थान है!
- दुर्ग के भीतर कुंभा के राज प्रसाद, उनकी ओखा रानी का महल, अनाज के कोठे (अन्न भंडार), सैनिकों के आवासगृह, पानी के विशाल टैंक , परमारो द्वारा निर्मित खतरे की सूचना देने वाली बुर्ज आदि के भग्नावशेष विधवान है!
- अरावली की सबसे ऊंची चोटी गुरु शिखर यही स्थित है!
- अन्य दर्शनीय स्थल मे अबुदा देवी का मंदिर, सनसेट पॉइंट, नक्की झील – यहां टोड रॉक व ननरॉक स्थित हैं!
- रसिया बालम मंदिर:- विश्व प्रसिद्ध दिलवाड़ा जैन मंदिर के पीछे पर्वत की तलहटी में यह मंदिर स्थित है! इस मंदिर में दो पाषाण मूर्तियां स्थापित हैं! एक मूर्ति युवक की है जो हाथ में विष का प्याला लिये है! इसके सामने नजदीक ही दूसरी मूर्ति युवती की है!

अन्य महत्वपूर्ण बिंदु :-

- माउंट आबू सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान है!
- माउंट आबू को राजस्थान का शिमला कहा जाता है!
- माउंट आबू अभ्यारण जंगली मुर्गो के लिए प्रसिद्ध है!
- सिरोही क्षेत्र राजपूताना गवर्नर जनरल के एजेंट (एजीजी) का मुख्यालय था!

आर जे एस परीक्षा में 2022 चयनित विद्यार्थी

साक्षात्कार

आयुषी हार्दिक अभिनन्दन और स्वागत है आपका ! आपने अपनी सफलता से अपने परिवारजनों क़ो गौरान्वित किया है ! हमें आपसे बात करके आज अत्यंत हर्ष महसूस हो रहा है ! आपको नई गूँज के समस्त परिवार एवं सम्पादक मण्डल की ओर से हार्दिक बधाई

1. आयुषी अपना जीवन परिचय शिक्षा एवं परिवार के बारे में बताएं

मेरा नाम आयुषी गोयल 23 वर्ष है मैंने अपनी स्कूली शिक्षा कैंम्बेरिज कोर्ट हाई स्कूल जयपुर से पूरी की है, उसके पश्चात मैंने एन.एल.यू. पटियाला से बी. ए. एल. एल. बी. की जो 2021 में पूरी हुई ! उसके बाद मैंने मणिपाल यूनिवर्सिटी से एल.एल. एम. की डिग्री भी प्राप्त की ! मेरे परिवार में माता-पिता व भाई हैं ! पिता सुनील गोयल भी आर.जे. एस.सेवा में कार्यरत हैं! माता गृहिणी है व भाई इंजीनियर है !

2. आपके प्रेरणा स्त्रोत जिन्हें आप अपनी सफलता का प्रथम श्रेय देना चाहें

मैं अपनी सफलता का प्रथम श्रेय ईश्वर, तथा अपने माता-पिता भाई व गुरुजनों को देना चाहती हूं ! अपनी तैयारी के दौरान, मुझे मेरे परिवारजनों ने हौसला दिया व मुश्किल समय में मेरे साथ रहे ! पिताजी ने पढ़ाई में मदद भी की ! मैं अपनी सफलता हेतु प्रेरणा स्त्रोत अपने पिता को मानती हूं ! उन्हीं के समर्पण व लगन को देखकर, मैंने न्याय न्यायिक सेवा में आने का फैसला लिया ! इंटर्नशिप के दौरान उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश श्री के. एम.जोसेफ सर से भी मैं अत्यंत प्रेरित हुई !

3. आयुषी, आपकी सफलता के मूल मन्त्र क्या हैं जो आप students क़ो बताना चाहें

सफलता के चार मूल मंत्र है जिनका साथ होना अत्यधिक आवश्यक है ! वे हैं, लगन, मेहनत, संगतता यानी (consistency) और अभ्यास ! यह आवश्यक है कि हमें हमारा गोल पाने की भूख होनी चाहिए ! मैं मानती हूं कि जब आपका why स्ट्रांग होता है तो how अपने आप मैनेज हो जाता है ! दूसरा मूल मंत्र है - मेहनत, परंतु यह आवश्यक है कि मेहनत सही दिशा में हो ! क्या पढ़ना है के साथ-साथ यह पता होना चाहिए कि क्या नहीं पढ़ना भी महत्वपूर्ण है ! तीसरा है consistency - मेरा मानना है कि निरंतरता के अभाव में मेहनत फलदायक नहीं होती ! रिवीजन करते रहना ही सफलता की बुनियाद रखता है ! चौथा है अभ्यास - हमें हमारी तैयारी की स्थिति से अवगत कराने के लिए अभ्यास महत्वपूर्ण है ! यह हमें हमारी कमजोरियों को भी बताता है ! हमें अपनी कमजोरियों पर विशेष ध्यान देना चाहिए !

4. आप अगर pre और mains की तैयारी के लिए कुछ विशेष बताना चाहें !

आर. जे.एस की परीक्षा तीन चरणों में होती है ! Pre, mains और साक्षात्कार ! तीनों की तैयारी का ढंग अलग है ! तैयारी के शुरुआती समय में pre और mains की तैयारी साथ की और विस्तार से विषयों का अध्ययन किया ! नोटिफिकेशन आने के बाद बारीकी से चीजों पर विशेष ध्यान देने के साथ साथ mock papers पर फोकस किया !'pre के बाद mains की तैयारी में प्रीवियस पेपर्स को ध्यान में रखते हुए important टॉपिक्स पर विशेष ध्यान दिया ! एकदम बारीक़ चीज़ों पर ध्यान क़ो कम कर दिया और concepts पर ध्यान दिया ! लैंग्वेज पेपर और टाइम मैनेजमेंट का विशेष ध्यान रखा ! खुद के notes से निरंतर revision किया और answer writing की प्रैक्टिस भी की !

5. RJS बनने के बाद क्या कुछ ऐसे बदलाव आप समाज में लाने के प्रयास आप करना चाहेंगे, यदि हाँ तो वो क्या हैं

RJS बनने के बाद मेरी प्राथमिकता रहेगी, कि मैं उच्च न्यायपालिका के निर्देशों की पालना करूं ! मैं कोशिश करूंगी कि समाज के निम्न व पिछड़े वर्ग को सरलता, शीघ्रता व सुलभता से न्याय प्राप्त हो सके, जो सस्ता भी हो ! के अतिरिक्त में प्रयास करूंगी की cases के बढ़ते भार क़ो कम करुँ परंतु इस प्रक्रिया में न्याय की हानि भी ना हो !

6. कुछ important books suggest करना चाहेंगे ?

RJS की परीक्षा में अधिकतम ध्यान पर bare acts पर होना चाहिए और उनका निरंतर रिवीजन करना चाहिए ! Bare acts के साथ बुक्स भी पढ़नी चाहिए ! परंतु पूरी नहीं, उन्हीं टॉपिक की जो इंपॉर्टेंट है व बार-बार परीक्षा में पूछे जाते हैं ! कोशिश करें कि खुद के नोट बनाए व उन्हीं से रिवीजन करें ! सारे meterial क़ो एक ही जगह compile करने की कोशिश करें ! Sources को लिमिटेड रख अधिक से अधिक रिवीजन पर फोकस करें ! बुक्स की बात करें तो मैंने contract act के लिए अवतार सिंह, CPC के लिए takwani, Constitution के लिए J. N. Pandey और M. P. Jain रेफर की थी ! IPC के लिए के.डी गौड़, CRPC के लिए kelkar भी पढ़ी थी !

7. Being a woman क्या आज भी आप मानती हैं कि जीवन में संघर्ष ज्यादा होते हैं या इस बात में सामाजिक स्थिति में अपेक्षित बदलाव आ चुके हैं ?

इसमें कोई दो राय नहीं है कि महिलाओं की सामाजिक व प्राकृतिक स्थिति ऐसी है, जिसमें उन्हें जीवन से संघर्ष करने होते हैं, परंतु आज के युग में निरंतर बदलाव आ रहा है ! इसका साक्ष्य आर.जे.एस. परीक्षा 2021 का रिजल्ट है !:120 सीटों में से 71 महिलाओं ने इस list में अपनी जगह बनाई है ! यह हमारे समाज के लिए एक गौरव की बात है ! Litigation के क्षेत्र में यदि देखा जाए, तो महिलाओं की संख्या पुरुषों के मुकाबले अत्यधिक कम है ! उच्च न्यायपालिका में भी महिलाएं कम है आवश्यक है कि उन्हें महिलाओं को प्रेरित किया जाए व उन्हें आगे बढ़ने के मौके दिए जाएं !

8. आपका मुख्य सन्देश सभी विद्यार्थियों के लिए जो तैयारी में लगे हैं !

इस समय किसी भी कंपटीशन एग्जाम की तैयारी में लगे विद्यार्थियों से मैं कहना चाहूंगी कि अपने ऊपर विश्वास रखें और यह सोच कर तैयारी करें कि आपका selection तो होगा ही होगा ! असफलताओं से हताश न हो ! यह भी सफलता की ही सीढ़ी है ! Luck की चिंता ना करें क्योंकि वह निष्ठा से मेहनत करने वालों का साथ देता ही है ! प्रेशर उतना ही लें जो आपको मोटिवेट करें और अपनी मेंटल हेल्थ पर भी विशेष ध्यान दें ! पढ़ाई के साथ-साथ थोड़ा समय रिफ्रेश होने के लिए भी उपयोग करें !

9. आपके जीवन का सबसे अधिक यादगार समय !

मेरे जीवन का सबसे यादगार दिन वह दिन जिस दिन रिजल्ट आया ! बहुत अधिक आदर, सत्कार व प्यार मिला ! उस दिन लगा कि जो भी कठिनाइयां सामने आई वो सब worth it थीं ! पूरे परिवार में अत्यधिक खुशी का माहौल था !

10. आपके जीवन की सबसे बड़ी चुनौती क्या रही ?

जीवन का सबसे चुनौतीपूर्ण समय आर. जे.एस की परीक्षा की तैयारी का समय था ! परीक्षा 3 चरणों में होने के कारण इसकी अवधि लम्बी होती है ! इस कारण self doubt और डिमोटिवेशन के दौर से गुजरना पड़ा परंतु मैंने सीखा कि यह भी इस प्रक्रिया का हिस्सा है ! सभी को इससे गुजरना पड़ता है ! परंतु आवश्यक है कि हम हताश ना हो और डटकर इन चुनौतियों से सामना करें ! अपने बड़ो, मित्रों व गुरुजनों से बात करने से सहायता मिलती है !

अक्टूबर अंक 2022 के लेखक परिचय

- गिरेंद्र सिंह भदौरिया

  prankavi@gmail.com

  9424044284

  6265196070

  पता :- वृत्तायन 957 स्कीम नंबर 51

  इंदौर मध्य प्रदेश पिन :-452006

- डॉ घनश्याम बादल

  215, पुष्परचना, गोविंद नगर

  रुड़की

  9412903681

  Ghansyambadal54@gmail.com

- बृजेश कुमार

  Aryabrijeshsahu24@gmail.com

  9785837924

  पता - जुरेहरा भरतपुर राज.

  321023

- प्रदीप भारद्वाज 'दीप'

  4/414, काला कुआँ

  हाऊसिंग बोर्ड अलवर

9828521472

PKB-414@yahoo.co.in

- अमरेंद्र कुमार तिवारी

दुबे हर कानपुर

पिन कोड -208019

Amendra.tiwari@gmail.com

- डा अदिति भारद्वाज

Flat no-3, plot 15

सत्यम नियर H-block

सिद्धार्थनगर

जयपुर राज.

8233567797

Email:- Bharadwaj.aditi5@gmail.com

- रामेश्वर महादेव

हिंदी विभाग डॉ बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा

विश्व विद्यालय औरंगाबाद महाराष्ट्र 431004

9022561824

ईमेल : rvadhekar@gmail.com

- नेतपाल यादव

  उत्क्रमित+2 उच्च विद्यालय शहरपुरा, सियाटांड़

  जमुआ, गिरिडीह (झारखंड) 815312

  8294129071

  Netlaly@gmail.com

- डॉ शिवा धमेजा 9351904104

  Drshivadhameja01@gmail.Com

  पता :- 140A गायत्री नगर जयपुर

- समीर उपाध्याय

  मनहर पार्क:96/ए चोटिला:363520

  जिला:सुरेंद्रनगर

  गुजरात

  भारत

  92657 17398

  S.l.upadhyay1975@gmail.com

Goonj nayi @gmail.com

शोध, साहित्य एवं संस्कृति की उत्कृष्ट पत्रिका

नई गूँज

DESIGN BY RAHUL DEEWAN

Sign up at www.nayigoonj.com
9785837924